प्रिय संपादक,

'संदर्भ' का पहला अंक पढ़ा, मुझे बहुत अच्छा लगा। मैं आपके दो अन्य प्रकाशनों 'चकमक' और 'स्रोत' का पहले से पाठक हूं। कृपया इस पत्रिका में चकमक की तरह कहानियां अधिक न दें, स्रोत की तरह वैज्ञानिक सामग्री अधिक दें। जैसे कम्प्यूटर के बारे में बताया वैसे ही अन्य यंत्रों के बारे में भी बताएं।

आशुतोष रघुवंशी,
सिवनी मालवा,
ज़िला होशंगाबाद, म.प्र.

प्रिय संपादक,

तीन महीनों के लिए देश से बाहर था। वापस आया तो 'संदर्भ' की प्रति मिली। यह कोशिश तसल्लीबख्श है। उम्मीद है इससे शिक्षकों एवं शिक्षाकर्मियों के साथ अच्छा संवाद बनेगा।

राणाप्रताप
रोहतक, हरियाणा

'संदर्भ' के पहले अंक को लोगों ने सराहा, ऐसी चिट्ठियां हमें मिलीं। उन खतों की कमी बहुत अखरी जिनमें संदर्भ के आकार, सामग्री आदि की आलोचनात्मक समीक्षा की गई हो। समीक्षात्मक पत्रों से हमें पत्रिका में गुणात्मक सुधार लाने में मदद मिलेगी। ऐसे पत्रों की प्रतीक्षा में,

संपादन मंडल

प्रिय संपादक,

'संदर्भ' का पहला अंक डाक से मिला। पत्रिका का आकार और सुंदर छपाई अच्छी लगी। मुझे इस प्रकार की सामग्री की बहुत आवश्यकता लग रही थी। बस 'चकमक' से काम चला रहा था। यहां तो उस प्रकार का कोई साहित्य उपलब्ध नहीं हो पाता। विस्तार से पढ़ने के बाद और पत्र लिखूंगा।

गोविंद उघले
शुजालपुर, म. प्र.

प्रिय संपादक,

'संदर्भ' का पहला अंक मुझे बहुत पसंद आया। गंगा गुप्ता का लेख 'मुझे डर लगता है गणित से' बहुत अच्छा लगा। मैं चाहूंगा कि यह लेख गुजराती-भाषी पाठकों तक भी पहुंचे। हम सन् 1963 से गुजराती में अंक-गणित विषय की एक पत्रिका 'सुगणितम' प्रकाशित कर रहे हैं। हम उपरोक्त लेख का अनुवाद गुजराती में अपनी पत्रिका में प्रकाशित करना चाहते हैं। उम्मीद है आपकी अनुमति मिलेगी।

ए.एम. वैद्य, प्रोफेसर
गुजरात विश्वविद्यालय, अहमदाबाद

प्रिय संपादक,

'संदर्भ' माध्यमिक और उच्चतर माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों के लिए काफी आकर्षक व रुचिपूर्ण बन सकती है। विशेष तौर से 'नक्शे का सस्ता स्टेंसिल' व 'इतिहास की खोज - करके देखो' लेख अच्छे लगे। आंकड़े बताता लेख चौंकाता नहीं, चिंतित करता है। कमोबेश यही स्थिति उत्तर-प्रदेश की है। शिक्षा या शिक्षा संस्थानों के प्रति सामान्यतः बच्चों के मन में पैदा हुई अरुचि को दूर करने के लिए किए जा रहे प्रयासों का एक उदाहरण पुस्तक में प्रकाशित लेख 'आया समझ में' प्रस्तुत करता है।

अनुराधा पाण्डे
चम्पानौला, अल्मोड़ा, उ. प्र.

प्रिय संपादक,

संदर्भ का सितम्बर-अक्टूबर अंक मिला। मै स्वयं शिक्षक हूं इसलिए कह सकता हूं कि यह पत्रिका शिक्षक समुदाय के लिए अत्यंत उपयोगी है। यह कुछ नया सोचने, करने का स्फुरण जागृत करती है हमारे भीतर। इसलिए यह आशा जागती है कि इससे शिक्षा-क्षेत्र में आया ठहराव अथवा गतिमंदता किन्हीं-न-किन्हीं अंशों में अवश्य दूर होगी। हमारे राष्ट्रीय जीवन का एक दुखद पक्ष यह है कि हम दिन-ब-दिन गज़ब के सुविधा-प्रेमी हो रहे हैं। हम चाहते हैं कि हमें कुछ न करना पड़े या बहुत कम करना पड़े और हम बड़े ठाठ-बाट से जिएं। हमारा शिक्षक वर्ग भी इस जीवन शैली का शिकार हो रहा है। मुझे लगता है कि 'संदर्भ' को इस दिशा में कुछ कारगर प्रयास करना चाहिए, ताकि शिक्षा-क्षेत्र की तंद्रा टूटे। मुझे प्रसन्नता होगी यदि यह पत्रिका इस दृष्टि से कोई वैचारिक मंच तैयार करने की पहल कर सके। मैं समझता हूं कि ऐसे किसी अभियान से अनेक निष्ठावान शिक्षक आपके साथ सहयोगार्थ खड़े हो सकते हैं। कुछ उत्साही और सक्रिय शिक्षकों की सहायता से समूचे देश के शिक्षकों में कर्तव्यबोध जागृत किया जा सकता है। मेरा निवेदन है कि इस संबंध में थोड़ा विचार करें।

जगदीश तोमर
जीवाजीगंज, ग्वालियर, म.प्र.

प्रिय संपादक,

'संदर्भ' का पहला अंक दिल्ली के भारतीयम् मैदान, जहां बच्चों, शिक्षकों व अन्य कार्यकर्ताओं का समूह मज़े लेने में मशगूल था, प्राप्त किया।

जॉन हॉल्ट के अनुभव आज के संदर्भ में कितने सार्थक सिद्ध होते हैं। कहने का मतलब है कि इस तरह के अनुभवों को आत्मसात करके यदि आज कोई शिक्षक प्रयास कर रहा है तो उसे क्या नए परिणाम मिले, यह भी आप उदाहरण सहित देंगे तो अच्छा होगा।

इतिहास की खोज को जिस प्रकार समझाया गया है वह सही लगा। हमारे स्कूलों में इतिहास पढ़ाने के तरीकों को और रुचिकर बनाने में इस तरह की गतिविधियां मददगार साबित होंगी। सत्यजीत-रे की कहानी 'शिवु और राक्षस' में शिवु के माध्यम से बच्चे की कल्पनाशीलता को बहुत अच्छे ढंग से दिखाया गया है पर मछली के पेट में उस राक्षस के प्राण जैसी बात से एक गलत धारणा को और परिपक्वता भी मिलने का खतरा है।

गीता (विज्ञान शिक्षिका)
रा. कन्या उ. मा. वि., आसन
ज़िला रोहतक, हरियाणा